© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 6 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section : Engineering and Technology

इक्कीसवीं सदी में संस्कृत-वाङ्मय से अपेक्षाएँ एवं चुनौतियाँ

डॉ.दीपमाला उपाध्याय
भूतपूर्व शोध-छात्रा, साहित्य विभाग,
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत।

संस्कृत के विषय में यह कहना समीचीन होगा कि शरीर में जो स्थिति आत्मा की है वहीं स्थिति भाषाओं में संस्कृत की है- 'आत्मा यथा शरीरेषु तथा भाषासु संस्कृतं'। ध्यातव्य है कि संस्कृत हम उस भाषा को कहते हैं जो परिष्कृत एवं परिमार्जित है- 'सम्यक कृत परिष्कृतं इति संस्कृतम्'। जब भारत की संस्कृति का जन्म हुआ और मानव वाचाल हुआ। उसने भाषा सीखी बोलने के यन्त्र तथा तन्त्र उसके पास आये, नाना वाणियों का जन्म हुआ, नई-नई भाषाएँ निकलीं, तब भाषा को जो परिमार्जित रूप सामने आया वह 'संस्कृत' है। 'संस्कृत' शब्द 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातु से 'क्त' प्रत्यय लगने पर निष्पन्न होता है। जिसका मौलिक अर्थ है- 'संस्कार की गई भाषा' वस्तुत: अनेक संस्कारों के भावों अन्तर्निहित किये हुये यह शब्द संस्कृति का भी बोध कराता है और भाषा के रूप में सदैव ही परिमार्जित एवं शिष्ट भाषा के स्वरूप को स्पष्ट करता है।

भारतीय मनीषा का समस्त चिन्तन, मनन, गवेषणा तथा लौकिक-अलौकिक समग्र अनुभूति इसी संस्कृत वाङ्मय में समाहित है। यह विश्व की समस्त परिष्कृत भाषाओं में प्राचीनतम है। विश्व साहित्य का प्राचीनतम ग्रन्थ 'ऋग्वेद' इसी वाङ्मय में उपनिबद्ध है। समाज के प्रबुद्ध वर्ग को इस वाङ्मय से अनेक अपेक्षाएँ है क्योंकि जीवन का सार इस वाङ्मय में निहित है। महर्षि 'वेदव्यास' की घोषणा है- न हि मानुषात् श्रेष्ठतर हि किञ्चित अर्थात् मानव सृष्टि की सर्वोत्तम एवं सुन्दर रचना है। प्रत्येक मनुष्य को सम्यक जीवन जीने कतिपय मूल्यों एवं सिद्धान्तों की अपेक्षा होती है। मनीषियों ने मानव जीवन के सर्वांगीण उन्नयन हेतु जिस पुरुषार्थ चतुष्ट्य की परिकल्पना की है, प्रकारान्तर से उन्हीं की हम जीवनमूल्य कह सकते हैं। मूल्य सदैव शाश्वत एवं अपरिवर्तनीय होते हैं प्रत्येक संस्कृति शाश्वत मूल्यों पर आश्रित है। इसके बिना परिवार, समाज या राष्ट्र की संस्थाओं में सामंजस्य नहीं आ सकता। मनुष्य के प्राप्तव्य चारों लक्ष्यों- धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष का सुन्दर समन्वित विकास संस्कृत साहित्य में उपलब्ध है धर्म और मोक्ष पुरुषार्थों से सम्बद्ध ग्रन्थों से तो सभी सुपरिचित है किन्तु 'अर्थ' एवं 'काम' से सम्बन्धित 'कौटिल्य' का 'अर्थशास्त्र' और 'वात्स्यायन' का कामसूत्र अपने-अपने क्षेत्र में अपूर्व ग्रन्थ तो है ही साथ ही तत्सम्बद्ध ग्रन्थों की एक सम्पूर्ण परम्परा के भी पोषक तथा जनक है। गणित विज्ञान ज्योतिष आदि के विभिन्न प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में प्रस्तुत किये गए सिद्धान्तों

की वैज्ञानिकता एवं प्रमाणिकता की आज सारा संसार स्वीकार कर चुका है। इससे स्पष्ट है कि संस्कृत साहित्य जीवन के केवल आध्यात्मिक पक्ष का ही चित्रण नहीं करता अपितु लौकिक तथा भौतिक पक्ष को भी समान रूप से चित्रित करता है। संस्कृत वाङ्मय में सत्यं शिव एवं सुन्दरं का अद्वितीय सामञ्जस्य उपलब्ध होता है। महाभारत आदि पर्व में तो स्पष्ट रूप से यह उद्घोषणा की गई है–

धर्मे चार्थों च कामे मोक्षे च भरतवर्षभ

यदि हास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्।।

वर्तमान काल में मानव के सम्मुख सबसे बड़ा संकट नैतिकता के लोप का है समग्र विश्व में सर्वत्र नैतिक मूल्यों का ह्रास की स्थिति उपस्थित होती जा रही है। संस्कृत वाङ्मय ने सदैव ही आदर्शवाद, अध्यात्मिकता एवं उच्च नैतिकता का जो मानदण्ड प्रस्तुत किया है वह आज की संकटापन्न स्थिति में भी परम उपयोगी है। इस वाङ्मय में सब (मनसा, वाचा, कर्मणा) प्रकार की शुचिता पर बहुत बल दिया गया है। यथा–

"वृत्तं यत्नेन संरक्षेद वित्तमायाति याति च

अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्तस्तु हतो हतः।।"

यदि वास्तव में अपनी संस्कृति की रक्षा करना चाहते हैं तो हमें परिवार से प्रारम्भ करना होगा। तभी हम समाज और राष्ट्र के प्रति ईमानदार बन सकते हैं, यदि हमारा परिवार टूट गया और 'मातृदेवोभव' 'पितृदेवोभव' तथा आचार्य देवोभव' जैसी मानवीय मूल्यों की परम्पराएँ नष्ट हो गई तो भारतीय संस्कृति की जड़े मुरझा जायेगी और सामाजिक उन्नयन सम्भव न हो सकेगा। आज समाज विखण्डित हो रहा है। परिवार में स्नेह नहीं रह गया है। समाज का प्रत्येक वर्ग विद्वेष की भावना से ग्रस्त है लोग अपनी संस्कृति को विस्मृत कर पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित हो रहे हैं। आज समग्र विश्व में एकता एवं अखण्डता की सुरक्षित रखने की समस्या उत्पन्न हो गई है। यह तभी अक्षुण्ण रह सकता जब हम वैदिक वाङ्मय में प्रतिपादित तथ्यों पर ध्यान और उस पर अमल करें।

आधुनिक युग में विज्ञान की महत्ता है। भौतिक उन्नयन हेतु किये जाने वाले नित्य नवीन आविष्कारों एवं अनुसंधानों ने कम्प्यूटर को जन्म दिया जिसमें कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक सूचनाएँ भरी जा सकें। वैज्ञानिक सतत् एक ऐसी भाषा के अन्वेषण में संलग्न हैं जो कम्प्यूटर में उपादेय हो सके। संस्कृत भाषा का शब्द वर्गीकरण तथा विश्लेषण सभी भाषाओं की अपेक्षा अधिक वैज्ञानिक है। यही कारण है कि कम से कम शब्दों से अधिक से अधिक सम्प्रेषण की क्षमता के कारण संस्कृत भाषा कम्प्यूटर प्रणाली में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

संस्कृत साहित्य का इतिहास केवल भाषा का इतिहास नहीं है वरन् यह साहित्य प्राचीन भारत में नैतिक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा आध्यात्मिक सभी प्रकार के जीवन का सर्वाङ्गीण चित्रण है।

चुनौतियाँ:

1. शासनतंत्र द्वारा निर्धारित त्रिभाषासूत्र में संस्कृत को स्थान नहीं दिया गया है। फलस्वरूप संस्कृत का जैसा उत्थान अपेक्षित था वैसा नहीं है। रोजगारपरक न होने के कारण आज संस्कृत विषय के प्रति छात्रों का रूझान न के बराबर है। मेरे मतानुसार कम से कम इण्टर तक 'संस्कृत' को एक अनिवार्य विषय के रूप में पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए क्योंकि जीवन के समग्र विकास में इस वाङ्मय की महत्वपूर्ण भूमिका है।

2. आज के विशुद्ध वैज्ञानिक एवं भौतिकवादी युग में व्यावसायिक पाठ्यक्रम का ज्यादा प्रसार है। अन्य भाषाओं की तुलना में संस्कृत के अपेक्षाकृत क्लिष्ट होने के कारण भी विद्यार्थी इस विषय के प्रति उदासीन रहता है।

3. आज प्राचीन समय की भाँति शिक्षा देने वाले न तो शिक्षक है और न ही उस तरह की जिज्ञासु विद्यार्थी फलस्वरूप इस भाषा की स्थिति जैसी होनी चाहिए, वह नहीं हो पा रही है।

4. महाविद्यालयों में ही इस विषय के छात्र/छात्राओं की संख्या अपेक्षाकृत विषयों से कम होती है।

यदि भविष्य में उक्त स्थिति रही तो इसमें संशय नहीं कि शिक्षक शिक्षिकाओं को भी छात्रों के अभाव में परेशानी का सामना करना पड़े। अंत में यही कहना समीचीन प्रती होता है–

"यथा क्षेत्रं बिना शस्यं यथा वाणी बिना जलम् तथैव भारतं राष्ट्रं बिना संस्कृतं भारती।''

संदर्भ सूची –

1– मनुस्मृति

2– महाभारत

3– अथर्ववेद

4– रामायण

5– कामसूत्र

6– चाणक्यकृत अर्थशास्त्र

7– ऋग्वेद